Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

मत्स्येन्द्र शुक्ल की कविताओं में गरीब किसानों का आत्मसंघर्ष

अर्चना शुक्ला
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रींवा (म0प्र0)

Article Info
Volume 4, Issue 3
Page Number : 194-197
Publication Issue :
May-June-2021
Article History
Accepted : 01 June 2021
Published : 15 June 2021

सारांश– कवि मत्स्येन्द्र इस सत्य से परिचित हैं कि किसान ही इस धरती का प्रथम उत्पादक है। किसान की मेहनत के बिना किसी प्रकार का खाद्य उत्पादक सम्भव नहीं है। हम अपने मुख से जितनी भी वस्तुएँ पेट में उतारते हैं वह किसी न किसी रूप में हमें धरती से ही प्राप्त होती है। इसके साथ यह सत्य भी जुड़ा हुआ है कि प्रत्येक वस्तु जो धरती से पैदा होती है उसका जन्मदाता किसान ही होता है। किसान के बिना जीवन सम्भव है, पर किसानी के बिना नहीं।

मुख्य शब्द– मत्स्येन्द्र शुक्ल, कविता, गरीब किसान, आत्मसंघर्ष, जन्मदाता।

मत्स्येन्द्र शुक्ल की कविताओं में सामाजिक परिवेश के विभिन्न पहलू दृष्टिगत होते हैं। समाज में व्याप्त वर्गीय संघर्ष को आपने बड़ी सूक्ष्मता के साथ अपनी कविताओं में चित्रित किया है। आपने सामाजिक वर्ग की अवधारणा से अपनी कविताओं का प्रमुख विषय बनाया है। हमारे सामाजिक परिवेश में वर्ग का प्रचलन उत्पादन साधनों के विविधता के कारण उत्पन्न हुआ है। सामाजिक परिवेश की दृष्टि से मत्स्येन्द्र शुक्ल ने विविध परिस्थितियों को मानवीय भावनाओं से जोड़कर प्रस्तुत किया है। जैसे–हम देखते है कि समाज में उच्च वर्ग का जीवन विलासितापूर्ण होता है और यह वर्ग अत्यन्त अभिमानी, स्वावलम्बी और महात्वाकांक्षी होता है। वास्तव में यह वर्ग अपने परिवेश का अनुसरण करता है और समाज को बताना चाहता है कि उच्च वर्ग का अपना अलग सामाजिक परिवेश है। मत्स्येन्द्र शुक्ल ने समाज को विभिन्न समस्याओं जैसे आर्थिक विषमता, भुखमरी, कुपोषण, रोगग्रस्तता, दीनहीन दशा का अनुभाविक चित्रण अपनी कविताओं में किया है। जहाँ एक ओर उच्च वर्ग पूँजीवाद का प्रतीक है तो मध्यम वर्ग समझौते का और निम्न वर्ग अभावों का प्रतीक है। सामाजिक रूप से ये तीनों वर्ग अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए निरन्तर संघर्ष करते रहते हैं। उच्च वर्ग की महात्वाकांक्षा और आर्थिक सम्पन्नता के कारण मध्यम और निम्न वर्ग अपने आपको शोषित के रूप में देखने लगता है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

मत्स्येन्द्र शुक्ल का काव्य ग्रामीण जीवन की प्रकृति से जुड़ा हुआ है। कवि मत्स्येन्द्र बाल्यावस्था से ऐसे ग्रामीण परिवेश में पले–बढ़े हैं जहाँ अभाव, दुःख तथा जमींदारों एवं सेठ–साहूकारों का शोषण निरन्तर चला आया है। ऐसे ग्रामीण जीवन का चित्रण उन्होंने यहाँ की पनिहारिनों, श्रमिकों तथा गाय, बैलों के चरने–चराने से जोड़कर किया है। अपनी कविता यात्रा का आरम्भ उन्होंने सादगी भरे सरल जीवन को किसान चेतना का आधार बनाया था, किन्तु उन्होंने देखा कि किसान के जीवन की कठिनाइयाँ इतनी भयावह है कि जिस प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पूरे समाज या देश की होती है।

मत्स्येन्द्र की कविता का किसान मातृभूमि को आने वाले परतन्त्रता के संकट से बचाने के लिए एकजुटता का परिचय देकर 'जवान' रूप में देश की रक्षा करता है। कवि कहता है–

''जहाँ देश को पड़ी जरूरत
जुटकर आगे आये।
शीश उठाकर खून बहाया
संकट दूर भगाये।।''[1]

जन–जीवन में किसानों का प्रवेश भारतेन्दु युग से ही आधुनिकता के एक लक्षण की तरह होता है। भारतेन्दु ने अपने नाटकों में लोकभाषा या जन–भाषा का प्रयोग इन्हीं किसानों के लिए किया है जो अधिक पढ़े–लिखे नहीं थे। पूरे देश या कि भारतीय समाज में बढ़ती हुई शिक्षितों की संख्या के अनुरूप द्विवेदी युग में वास्तविक आधुनिकता का आगमन होता है। डॉ0 देवी शंकर अवस्थी ने लिखा है– ''यदि रिसर्च के बिन्दु को खींचकर लकीर बना देने वाली प्रकृति से कुछ समय के लिए पीछा छुड़ाकर सोचा जाय तो मेरे विचार से आधुनिक कविता का प्रारम्भ इस तीसरे चरण अर्थात् 1900 ईस्वी के आस–पास से माना जा सकता है। इस समय के आस–पास 'नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना होती है। 'सरस्वती' का प्रकाशन आरम्भ होता है, खड़ी बोली का आन्दोलन जोर पकड़ता है और बालमुकुन्द गुप्त, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्रीधर पाठक और हरिऔध जैसे व्यक्तित्व सामने आते हैं।''[2]

आधुनिकता के उदय के साथ ही नवजागरण तथा जातीय जागरण की भावना देशभक्ति और राष्ट्रीय चेतना को जन्म देती है। मत्स्येन्द्र के काव्य में विद्यमान 'किसान चेतना' लोकतन्त्रीय चेतना से प्रेरित समझ पड़ती है। कवि को कल्पना में अब यह गाँव बदल गया है।

प्रेमचन्द्र का प्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' के कथानायक में होरी के आगमन से किसान जीवन के ऐसे नायक का उदय हुआ है जिसे अपने 'मर्जाद' की चिन्ता सताती है और अपनी गरीबी की भी। मजदूर और किसान शोषित का प्रतिनिधित्व करते हैं और अपने विपक्षी शोषकों, जमींदारों तथा महाजनों को बखूबी पहचानते हैं। मत्स्येन्द्र के काव्य में अधिकांश ऐसे किसानों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो श्रम से नहीं भागते

तथा मजदूरी या कृषि कर्म में अपनी जोत का लगान देने के बाद जमींदारों के दबाव में नहीं रहना चाहते हैं। मत्स्येन्द्र के काव्य में वर्णित ग्रामीण जीवन के ऐसे किसान हैं जो जनवादी चेतना से आगे बढ़ता हुआ लोकतन्त्रीय चेतना में अपने उपस्थिति दर्ज कराता है। यहाँ मत्स्येन्द्र चेतना का अनुशीलन करना उचित माना है।

जनवादी चेतना प्रगतिशीलता की परवर्ती पहिचान है जिसमें प्रमुख रूप से जन की भागीदारी होती है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है– ''प्रेमचन्द्र ने अपनी आँखों से समाज को देखा था। वे इस नतीजे पर पहुँचे थे कि बन्धन भीतर का है, बाहर का नहीं। बाहरी बन्धन भी दो प्रकार का होता है एक का नाम है संस्कृति और दूसरे का नाम है सम्पत्ति।''[3] जन संस्कृति का ही एक रूप किसानों की संस्कृति है जिन्हें अब अपने अधिकार का ज्ञान होने लगा है। किसानों की इसी चेतना को यदि हम लोकतन्त्रीय चेतना के माध्यम से समझ ले तो मत्स्येन्द्र के काय का ग्रामीण और किसान जीवन की सही पहचान की जा सकती है। किसान की समझदारी चाहे कितनी ही बड़ी हो पर परिश्रम करने के लिए वह मजबूर होता है। मत्स्येन्द्र एक कविता में लिखते हैं–

''पसीने से भींगी बण्डी फटी कमीज
सिर से बँधा गमछा उबास बदबू से भरा
मेड़ पर रख दिया कि सूखे तनिक देर
झेले नग्न देह थोड़े समय तक सूरज का ताप
हल चला पसीने से धोता सूखा चेहरा''[4]

मेहनती किसान का पसीने का भीगा शरीर और उसके कपड़े की बदबू का वर्णन तो इनकी कई कविताओं में है। इतनी मेहनत करने वाले इन कृषक मजदूरों की सुधि लेने नेता था जनप्रतिनिधि कई वर्ष बाद इनके बीच आते हैं। यदा–कदा यदि कोई इन गाँवों में पहुँचता भी है तो वह अपना स्वार्थ पूरा कर दुबारा आने की बात नहीं सोचता। यदि देश में वोट की राजनीति नहीं होती तो इनसे कोई भी जनप्रतिनिधि बात करना पसन्द नहीं करता। उक्त यथार्थ को अब देश का किसान जानता है। समसामयिक 'किसान चेतना' इसी समझ का दूसरा नाम है। ग्रामीण किसानों के जागृत होने से सारा समाज जागृत हो गया है। जहाँ आम आदमी दुःख से कलझ रहा है वहाँ ग्रामीण किसान अब सत्ता की पोल खोलने को तैयार है। कवि अपने इन पंक्तियों के माध्यम से कृषक मजदूरों की इन क्रियाओं पर सूक्ष्म दृष्टि डालकर समाज के सामने लाता है–

''काँख कर बोझ उठाता मजदूर जो कुछ दूर
नहीं समझ पाता जुल्म का अन्त कौन करेगा अब
खलिहान की कटीली धूप में ऐसे ही तपेगी देह
जाँगर–चोर कह ललकारेगा मालिक दुष्ट।''[5]

कवि मत्स्येन्द्र ने अपनी कविताओं में प्रकृति का वर्णन बखूबी किया है। वे कहते हैं कि प्रकृति की सान्निध्य में रहते–रहते मनुष्य कब कृषक बन गया, शायद उसे इसका पता ही नहीं चला। यही सौन्दर्यमयी प्रकृति ही मानव–जीवन का हेतु बन चुकी है। शायद किसान ही सर्वाधिक प्रकृति के सम्पर्क में रहता है। मौसम का परिवर्तन ही किसान की समस्त क्रियाओं का नियामक है। कवि मत्स्येन्द्र एक कृषक परिवार में पैदा हुए थे और यही कारण है कि वे प्रकृति और ग्रामीण संस्कृति के अत्यन्त निकट हैं। ग्रामीण परिवेश में खेती–किसानी सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इन्होंने अपनी कविताओं में जो ग्रामीण परिवेश का चित्र खींचा है वो कल्पनाजन्य नहीं है बल्कि कवि का प्रत्यक्ष अवलोकन है। वस्तुतः कवि मत्स्येन्द्र इस सत्य से परिचित हैं कि किसान ही इस धरती का प्रथम उत्पादक है। किसान की मेहनत के बिना किसी प्रकार का खाद्य उत्पादक सम्भव नहीं है। हम अपने मुख से जितनी भी वस्तुएँ पेट में उतारते हैं वह किसी न किसी रूप में हमें धरती से ही प्राप्त होती है। इसके साथ यह सत्य भी जुड़ा हुआ है कि प्रत्येक वस्तु जो धरती से पैदा होती है उसका जन्मदाता किसान ही होता है। किसान के बिना जीवन सम्भव है, पर किसानी के बिना नहीं।

सन्दर्भ सूची :–

1.हवा में खेलते शब्द, मत्स्येन्द्र शुक्ल, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, 2007, पृ0 70.
2.आलोचना और आलोचना, डॉ0 देवीशंकर अवस्थी, पृ0 83.
3.हिन्दी साहित्य की भूमिका, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ0 133.
4.कहना बहुत कुछ, मत्स्येन्द्र शुक्ल, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002, पृ0 60.
5.कहना बहुत कुछ–पसीने से धोता चेहरा, मत्स्येन्द्र शुक्ल, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002, पृ0 94.